नौलखा बाग़ में गोरखनाथ | By Sunita Panchal

नौलखा बाग़ में गोरख जी ने अपना डेरा डाला
रे कैसा ढंग निराला, के चारों और उजाला

चौदह सौ चेले संग में, सब रंगे एक ही रंग में
दिन रात साथ में रहते और गुरु की सेवा करते
चारो तरफ हरियाली, झुकी फूलों से लदबद डाली
गुरु गोरख गयानी ऐसे, चेहरे पे तेज की लाली
औघड़ नाथ चेले को देखो कैसा है मतवाला
कैसा ढंग निराला, के चारों और उजाला

बागो में धूना रमाये कोई तन पे भस्म रमाये
कोई लम्बे चोटे वाला, कोई गंजी चाँद वाला
कोई पीवे सुल्फा गांजा, कोई पिए भंग का प्याला
कहीं पड़े हैं लौटे धोटे, कहीं सूख रहे लंगोटे
मोटे पतले लम्बे छोटे कोई रंग का काला
कैसा ढंग निराला, के चारों और उजाला

जब सुनी बात बाछल ने और कपटी बहन का छल ने
गुरु गोरख आये बाग़ में कैसा आनंद छाये बाग़ में
सुन बाछल शरण में आई गोरख से व्यथा सुनाई
मुझे दो वरदान गुरु जी बड़ी तुमसे आस लगाई
दासी बन के करुँगी सेवा तेरी रटूं नाम की माला
कैसा ढंग निराला, के चारों और उजाला

भोजन पकवान बनाये गुरु गोरख खूब जिमाये
दिन रात करि गुरु सेवा बाछल को मिली फिर मेवा
गुरु गोरख ने खुश होकर, फिर हाथ मुंह को धोकर
धूने से गूगल उठाई , गई बाछल तुरत बुलाई
कहे सुनीता पांचाल गुरु गोरक: है रखवाला
कैसा ढंग निराला, के चारों और उजाला

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a8%e0%a5%8c%e0%a4%b2%e0%a4%96%e0%a4%be-%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%97%e0%a4%bc-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82-%e0%a4%97%e0%a5%8b%e0%a4%b0%e0%a4%96%e0%a4%a8%e0%a4%be%e0%a4%a5-by-sunita-panchal-2/